Page I

B.A. (III), Psychology (H)
Paper-IV, Social Psychology

Topic समूह के कार्य (Functions of group)

प्रत्येक समूह द्वारा अपने सदस्यों की आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों की पूर्ति की जाती है। अतः प्रत्येक सदस्य या व्यक्ति अपने लक्ष्यों या आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समूह की सदस्यता स्वीकार करता है। समूह के कार्यों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जाता है।

(1.) सदस्यों की मुख्य आवश्यकताओं की पूर्ति — व्यक्ति की आवश्यकताओं को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है

(1.) Primary – प्राथमिक या मुख्य

(2.) Secondary – गौण

मुख्य आवश्यकताओं के अन्तर्गत भोजन, वस्त्र एवं आवास आते हैं इन आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति स्वयं नहीं कर सकता है जो जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। समूह ही इन आवश्यकताओं की ~~पूर्ति का~~ पूर्ति करता है।

(2.) गौण आवश्यकताओं की पूर्ति – व्यक्ति के जीवन में मुख्य आवश्यकताओं के अतिरिक्त बहुत सारे गौण आवश्यकताएँ होती है। जैसे- समाज में प्रतिष्ठा पाना, नाम कमाना, पढ़ना-लिखना आदि आवश्यकताएँ होती है।

(6) सामाजिक निरंतरता को बनाये रखना — किसी समूह द्वारा सांस्कृतिक तत्वों को अपने में संजोकर रखता है तथा समाजीकरण के माध्यम से नये सदस्यों को प्रदान करता है तथा समूह सामाजिक नियंत्रण को बनाए रखता है।

(7) आदेश कार्य — समूह द्वारा कुछ आदेश कार्य भी किये जाते हैं जैसे, गरीबों को मदद करना, अनाथ बच्चों की मदद करना समूह के द्वारा बेहतर तरीके से इस कार्य को किया जा सकता है क्योंकि कुछ समूह का लक्ष्य ही निर्धारित होता है।

(8) सुरक्षा भाव की पूर्ति — समूह का महत्वपूर्ण कार्य होता है कि वह अपने सदस्यों की हितों की रक्षा कर उनमें सुरक्षा की भावना जागृत करता है और तब उस समूह के सदस्य समूह के कार्यों से संतुष्ट रहते हैं और इस प्रकार उनमें सुरक्षा की भावना जागृत हो जाता है।

(9) सामूहिक विश्वास एवं सामूहिक कार्य — सामूहिक विश्वास एवं सामूहिक कार्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

(10) मान्यताओं का विकास और इन्हें मानना या इनके अनुकूल कार्य करना — समूह में ही मान्यताओं का विकास होता है जो इसके सदस्यों के पारस्परिक संबंधों इस आधार पर नियंत्रित एवं नियंत्रित रखते हैं इन्हीं मान्यताओं को समूह के सदस्य स्वीकार करते हैं और इसके अनुकूल ही कार्य करते हैं।

Kumar Patil
Maharaja College

Page 2

भी गौण समूह द्वारा पूरा होता है

(3) अधिपत्य भाव की संतुष्टि - व्यक्ति में अधिपत्य की आवश्यकता होती है जिसके कारण उसमें नेतृत्व करने की प्रबल इच्छा होती है अगर व्यक्ति के इस भाव की संतुष्टि समूह में न हो तो उसमें असमानता आ जाती है ऐसी स्थिति में व्यक्ति समूह में नेता की भूमिका में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है क्योंकि किसी समूह में नेता एवं उसके अनुगामी होते हैं नेता अपनी अधिपत्य-भाव की पूर्ति अनुगामियों को निर्देश देकर करता है

(4) नई आवश्यकताओं का निर्माण - समूह में परिवर्तन के साथ-साथ नई आवश्यकताओं का भी जन्म होता है समूह नई आवश्यकताओं का निर्माण करता है ताकि उसके सदस्य उसमें बने रहें यदि समूह द्वारा नई आवश्यकताओं का निर्माण नहीं किया जाता है तो उसके सदस्य उस समूह को त्याग सकते हैं

(5) व्यक्ति का समाजीकरण - व्यक्ति के समाजीकरण में परिवार, पड़ोस, स्कूल, धार्मिक एवं आर्थिक संस्थान अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं